''स्वतंत्र तबला वादन में विस्तारक्षम रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन''

शोधसार :

विस्तारक्षम रचना यानी जिस रचना का विस्तार किया जाता है उस रचना प्रकार को विस्तारक्षम रचना कहते है। स्वतंत्र तबला वादन की प्रस्तुति प्रमुख दो भागों में की जाती है जिसे विस्तारक्षम रचना और पूर्व संकल्पित रचना के नाम से संबोधित किया जाता हैं। शोधार्थी के विचार से विस्तारक्षम रचना यह संकल्पना सिर्फ तबला इस वाद्य के साथ ही शुरू हुई है और विस्तारक्षम रचना बजाना सिर्फ तबला इस वाद्य पर ही मुमकिन हो पाया है और यह केवल तबला वाद्य के 'बाज' और 'बनावट' की वजह से ही सम्भव हो सका है। तबला इस वाद्य की बनावट तथा बाज अन्य अवनद्ध वाद्यों की तुलना में किस प्रकार अलग है? क्यों तबले पर ही विस्तारक्षम रचनाओं को बजाना सम्भव हो सका? इसके बारे में भी इस शोधप्रबंध में दृष्टि डालने का प्रयास शोधार्थी ने किया है। शोधार्थी का ऐसा मानना है कि, सभी तालो में खाली–भरी होती हैं, लेकिन तबला इस साज ने विस्तारक्षम रचनाओं द्वारा दिखा दिया की रचनाओं में भी खाली–भरी होती हैं। विस्तारक्षम रचनाओं में खाली–भरी का अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व विद्यमान रहता है तथा यह प्रकार अन्य किसी भी लय–ताल वाद्यों में नहीं पाया जाता हैं। फलतः तबला वाद्य अन्य लय–ताल वाद्यों की तुलना में अत्यंत श्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण माना जाता है, स्वतंत्र तबला वादन में पेशकार, कायदा, रेला आदि विस्तारक्षम रचनाओं की वजह से किस प्रकार तबला वाद्य ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है ? इसे भी इस शोधग्रंथ में दर्शाने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है। पखावज को तबले का जनक वाद्य कहा जाता है। पखावज पर विस्तारक्षम रचनाओं में पेशकार, कायदा नहीं बजाया जाता, प्रायः पखावज पर विस्तारक्षम रचनाओ में सिर्फ रेला बजाया जाता है। पखावज तबले से काफी बडा साज है तथा इसके बाए मुखपर गीले आँटे का प्रयोग किया जाता है। पखावज को खुले हथेली से बजाने के कारण यह साज तबला वाद्य की तुलना में उतना द्रुतलय में नहीं बज पाता है। पखावज पर रेले में तबले की तरह खाली–भरी नही बजती है, इस लिए क्या कारण है की, पखावज का बाज और बनावट विस्तारक्षम रचनाएँ बजाने के लिए तबले की तरह अनुकूल नही रहा हैं? आदि मुद्दों

के आधार पर लक्ष प्राप्ति के उद्देश्य से शोधार्थी द्वारा इस शोध–प्रबन्ध में दृष्टि डालने का प्रयास किया गया है। स्वतंत्र तबला वादन अधिकतर ताल त्रिताल में ही प्रस्तुत किया जाता है। त्रितालेत्तर तालों में वादन करते समय विस्तारक्षम रचनाओं का विस्तार ताल त्रिताल जितना असरदार क्यों नहीं होता? इसका भी अध्ययन करने का एक प्रामाणिक प्रयास शोधार्थी ने इस शोधप्रबन्ध में किया हुआ हैं। पहले के समय तबला वादन में विस्तारक्षम रचनाओं के विस्तार की पारंपारिक पद्धति एवं वर्तमान समय में आज के तबला वादकों द्वारा किए जानेवाली विस्तारक्षम रचनाओं की प्रस्तुति में कौन से बदलाव हुए हैं? इन तथ्यों को भी उजागर करने का कष्ट साध्य प्रयास शोधार्थी ने इस शोधप्रबंध में किया हुआ है। स्वतंत्र तबला वादन में प्रस्तुत कि जानेवाली सभी विस्तारक्षम रचनाओं की विस्तार क्रिया को पलटो के साथ लिपिबद्ध करके दर्शाने का प्रयास इस शोधग्रंथ में किया गया हैं। इन विस्तारक्षम रचनाओं का विस्तार विभिन्न जाति में भी लिपिबद्ध करके दर्शाया गया है।

तबले के सभी घरानों में विस्तारक्षम रचनाए बजायी जाती हैं, किन्तु सभी घरानों का इन विस्तारक्षम रचनाओं के बारे में अलग नजरिया हैं, विस्तार के प्रति अलग सोच विचार हैं। प्रस्तुत शोधप्रबन्ध के माध्यम से शोधार्थी ने सभी घरानों की विस्तारक्षम रचनाओं को, उनके विस्तार विधि को लिपिबद्ध करके दर्शाने का प्रयास इस शोध प्रबन्ध में किया हुआ हैं। तबले के सभी घरानों ने विस्तारक्षम रचनाओं का उपयोग स्वतंत्र तबला वादन में किस प्रकार किया? सभी विस्तारक्षम रचनाएँ एक दूसरे से अलग कैसे हैं? तबले के सभी घराने विस्तारक्षम रचनाओं के बारे में किस प्रकार अपने–अपने सोच विचार रखते हैं? और सभी घरानों ने इन विस्तारक्षम रचनाओं के लिए अपना योगदान किस प्रकार दिया हैं? स्वतंत्र तबला वादन में बजनेवाली विस्तारक्षम रचनाएँ किस प्रकार एक दूसरे से भिन्न है? आदि मुद्दों पर इस शोधग्रंथ में चर्चा की गयी है। सभी घरानों में विस्तारक्षम रचनाओं के वादन का तौर–तरिका अलग है, इन रचनाओं का अलग से अनुशासन हैं। इसलिए इस शोधग्रंथ में विस्तारक्षम रचनाओं की एक दूसरे के साथ विस्तार क्रम के दृष्टिकोन से तुलनात्मक विवेचन करने का शोधार्थी ने कष्ट, साध्य प्रयास किया हुआ है। साथसंगत करते समय तबला वादक इन विस्तारक्षम रचनाओं का उपयोग अपने

वादन में किस प्रकार करता हैं, तथा साथसंगत में विस्तारक्षम रचनाओं के विस्तार में कौन से बदलाव करने पडते हैं? साथ–संगत करते समय विस्तारक्षम रचनाओं का उपयोग तबला वादकों द्वारा अपने वादन में किस प्रकार किया जाता हैं? विस्तारक्षम रचनाओं का अस्तित्व साथसंगत करते समय किस प्रकार रहना चाहिए? इन तथ्यों को भी उजागर करने के उद्देश्य को इस शोध प्रबन्ध के माध्यम से पूरा किया गया है।

'स्वतंत्र तबला वादन में विस्तारक्षम रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन' इस शोधग्रंथ के अन्तर्गत कुल छह अध्यायों का संक्षिप्त रूप में विवेचन किया गया है। प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध प्रयोग निष्ठ शोधकार्य पद्धति के अनुसार प्रस्तुत किया गया हैं तथा इसके अंतर्गत प्रयोग निष्ठ तथ्यों का संकलन करके इन्हें प्रस्तुत किया गया हैं। विविध घरानों के इस विषय से संबंधित विद्वानों के विस्तारक्षम रचना के बारे में विचारों का संकलन इस शोध–प्रबन्ध के माध्यम से किया गया हैं। प्रस्तुत अध्याय में इस विषय के अंतर्गत विभिन्न महत्वपूर्ण ग्रंथो, सांगीतिक साहित्यिक पत्र–पत्रिकाएँ इनका गहन अध्ययन करके उनके अंदर व्याप्त, आवश्यक एवं महत्वपूर्ण जानकारी तथा विद्वान कलाकारों, तबला वादकों व अन्य विधा के कलाकारों, विशेषज्ञों के साक्षात्कार के माध्यम से जो भी तथ्य सामने आए हैं और इस शोध विषय का समग्र अध्ययन करने के पश्चात् जो भी निष्कर्ष परिणाम स्वरूप उद्‌घटित हुए हैं। उन्हें ही इस शोधप्रबन्ध में प्रस्तुत करने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया हैं। अतः मेरे इस शोधकार्य से आनेवाली पुश्तें लाभान्वित हो सकती है एवं भविष्य में इस क्षेत्र में और अधिक शोध कार्य की सम्भावनाएँ हो सकती हैं। इस शोध प्रबंध से आनेवाली पुश्तें प्रस्तुत विषय से संबधित कोई भी जानकारी हासिल करना चाहे तो वह इससे लाभ उठा सकेगी और इस से आगे यदि इस विषय से संबंधित या अन्य कोई शोधार्थी जब भी इस विषयपर अनुसंधान कार्य करने का प्रयास करे तो उनका आधार यह शोधग्रंथ बने और शोधार्थी यों को इस शोधग्रंथ की सहायता हो। इस दृष्टि, से भी मेरा शोधकार्य सफल हो सका तो में अपने इस प्रयास को सार्थक समझूँगा।

दिपक दाभाडे (शोधार्थी)